सिंहासन से हजार ख्वाहिशें

माननीय नरेंद्र भाई,

आलोक मेहता

प्रधानमंत्री पद के तीसरे वर्ष में प्रवेश के लिए शुभकामनाएं। 2004 के सिंहस्थ कुंभ में क्षिप्रा स्नान का पुण्य लाभ देर-सबेर मिला। इस बार 2016 में आपने स्नान के बजाय 'विचार महाकुंभ' का लाभ अर्जित किया। उज्जैन गृह नगर होने के कारण मेरे जैसे लोगों को ही नहीं, करोड़ों भारतीयों को राजा विक्रमादित्य, उनके अग्रज भर्तृहरि के सिंहासन, *नीति शतक* से जुड़ी नीतियों और न्याय के आदर्श सूत्रों का स्मरण हो जाता है। राजनीतिक सत्ता पाने से पहले संघ प्रचारक के रूप में भी आपने उज्जयिनी से कश्मीर तक यात्राएं की होंगी। अब तो उज्जयिनी बहुत बदल गया है। लेकिन पहले महाकाल मंदिर के सामने छोटी सी पहाड़ी के एक टीले पर खेलने वाले बच्चों को बताया जाता था कि इस टीले के नीचे विक्रमादित्य का सिंहासन है। इसलिए टीले के खास स्थान पर बैठने वाला स्वत: राजा विक्रमादित्य की तरह 'न्याय' पूर्ण संदेश देने लगता है। इसी तरह हमारे संस्कृत के विद्वान प्राध्यापक वेंकटाचलम ने हमें राजा भर्तृहरि के *नीतिशतकम* से एक सूत्र वाक्य रटाया था, जिसमें अहंकार खत्म करने का मार्ग दर्शित था। इस नीति सूत्र में लिखा है- 'जब मैं बिल्कुल अज्ञानी था, तब मैं मदमस्त हाथी की तरह अभिमान में रहकर अपने को सर्वज्ञानी समझता था, लेकिन विद्वानों की संगति में रहकर जैसे-जैसे मुझे ज्ञान प्राप्त होने लगा, मुझे समझ में आ गया कि मैं अज्ञानी हूं और मेरा अहंकार, जो मुझ पर बुखार की तरह चढ़ गया था, उतर गया।'

यह सूत्र वाक्य सिंहासन पर विराजमान सत्ताधारियों के लिए ही नहीं, हम जैसे हर पत्रकार पर भी लागू होता है। इसलिए हमें यह गलतफहमी नहीं रहनी चाहिए कि आपकी सरकार के दो वर्ष के कार्यकाल का लेखा-जोखा करने तथा आने वाले तीन वर्षों की चुनौतियों का सही अनुमान- निष्कर्ष हम ही बता सकते हैं। विक्रमादित्य दरबार के नवरत्न में धन्वंतरि, कालिदास, वररुचि, वराहमिहिर जैसे विद्वान सलाहकार शामिल थे। लोकतंत्र में प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति के पास नवरत्न के साथ देश-दुनिया के हजार सलाहकार रखने की क्षमता होती है। आपके पास भी हैं। सिंहासन के दरबार से युद्ध के मैदान तक रणनीतिकारों की सूझबूझ पर सफलता-विफलता, जय-पराजय निर्भर होती है। इस दृष्टि से भर्तृहरि की परंपरा-संस्कृति के अनुरूप अपनी सत्ता का लेखा-जोखा करते समय अपने 'रत्नों' भावी सलाहकारों का सही चयन करना है ताकि दो वर्ष की गलतियों को सुधारने के साथ अगले तीन वर्षों में जनता-जनार्दन की असली हजार ख्वाहिशों को पूरा करने में ठोस प्रयास हो सकें। कागज पर अंकित आंकड़ों के बजाय जमीन पर सफल हुए कार्यक्रमों से गरीब-अमीर के चेहरों, दिमाग और पेट तक पहुंचे लाभ से सरकार और समाज का भविष्य चमकेगा। असम-बंगाल के एक छोर से तमिलनाडु-केरल के दूसरे छोर तक के विधानसभा चुनाव अभियान और परिणाम से राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक तापमान का पारा सबको समझ में आ रहा है। चुनावी यज्ञ से निकलने वाली आग और धुएं से सबकी गलतफहमी दूर हो जानी चाहिए।

अगली पारी के लिए देवी-देवताओं, संत-महात्माओं, शंकराचार्यों का आशीर्वाद आप लेते रहते हैं। लेकिन राजनीति में चंद्रास्वामी के साथ-साथ आगे बढ़ते रहे सुब्रह्मण्यम स्वामी के महामंत्रों से मोरारजी देसाई, चंद्रशेखर, नरसिंह राव और मनमोहन सिंह को हुए लाभ-हानि का सही ब्योरा पुरानी फाइलों से पढ़ने के बाद उन पर निर्भरता तय करिएगा। कहीं ऐसा न हो कि असुरों को भस्म करने की शक्ति पाने वाले देवता असुरों को भस्म करने के बजाय भारत देश को विनाश के रास्ते पर ले जाने का माध्यम बन जाएं। पिछले दो वर्षों के दौरान आपके और पार्टी के बल पर सत्ता में आए कुछ भगवाधारियों ने अपने वचनों-कर्मों से सरकार के साथ समाज और देश की छवि धूल धूसरित की है। सत्ता का संरक्षण होने पर जातीय-सांप्रदायिक उपद्रव करने वालों के हौसले बुलंद हो जाते हैं। बिहार अकेला राज्य नहीं है, जहां आपराधिक तत्व हर सत्ता के साथ जुड़ते हैं। अन्य राज्यों में भी कमोबेश यही होता है। इसलिए उन्मादी हाथियों की तरह उपद्रवी सांप्रदायिक तत्वों को काबू में रखने की सबसे बड़ी चुनौती आपकी सरकार की रहने वाली है। देश की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक हथियारों की खरीदी और निर्माण पर हजारों करोड़ खर्च हों, लेकिन पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध जरूरी हैं। महाशक्तियों में किसी एक से पूरी तरह जुड़ना खतरनाक हो सकता है। आर्थिक विकास में बड़ी कंपनियों के साथ छोटे उद्यमों को बढ़ाना जरूरी है।

सिंहासन से जुड़ी जनता की ख्वाहिशें-चकाचौंध दिखने वाले महानगरों से दूरदराज धूप-बारिश-आंधी-तूफान-अंधेरों से जूझने वाले गांवों के सीधे-सादे भोले-भाले करोड़ों लोगों की हैं। उन्हें बुलेट ट्रेन से ज्यादा अपनी बैलगाड़ी-ट्रैक्टर चलाने लायक कच्ची-पक्की सड़क, रिजर्वेशन बिना भी तीन फुट बैठने की सुविधा देने वाली ट्रेन, बच्चों को बैठने लायक साधारण लकड़ी की मेज-कुर्सी- स्कूल कक्षा के कमरे की सही छत-कापी-किताब, शुद्ध पेयजल, सिर छपाने लायक छत, छोटा-बड़ा रोजगार, पांच सितारा अस्पताल नहीं, धन्वंतरि काल में बने आयुर्वेद की बताई जड़ी-बूटियों की न्यूनतम औषधियों और चिकित्सक की सुविधाओं को पाने की इच्छा अब भी है। आपकी घोषणाओं के बावजूद आपके अपने भाजपा के अनेक सांसदों ने दो वर्षों में अब तक एक आदर्श ग्राम गोद लेकर मॉडल सामने नहीं रखा। केंद्र सरकार के तहत चलने वाले एक भी बड़े अस्पताल को 24 महीनों में ऐसा नहीं बनाया जा सका जिसे अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय कहा जा सके। सड़क पर दुर्घटनाओं और हत्याओं की संख्या कम होने के बजाय बढ़ती गई है। मोटर वाहन चालन नियम-कानूनों को बदलकर कड़े कानूनी प्रावधानों पर अमल में प्राथमिकता को क्या कोई प्रतिपक्ष रोक सकता है? नितिन गडकरी ने मंत्री के नाते बड़ी सड़क परियोजनाएं स्वीकृत कर दी हैं, लेकिन उसके लिए पर्याप्त धनराशि, सामाजिक भागीदारी एवं समय पर निर्माण के लिए आपके ही सांसदों-विधायकों-पार्षदों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। आपका स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य कितना ही अच्छा है लेकिन जरा पता लगवाएं आपके सांसद-विधायक, पार्षद गली-मोहल्लों में कितने सक्रिय हुए? उनकी अकर्मण्यता की गंदगी क्या 2019 में भाजपा के रास्तों में रुकावट नहीं बनेगी? उनका रोना यह है कि नेहरू से अटल बिहारी वाजपेयी तक देश में पार्टी की प्रादेशिक-स्थानीय कार्यकर्ताओं की सीधी सुनवाई की गुंजाइश थी। आधुनिक संसाधनों ट्विटर, फेसबुक, इंटरनेट, मोबाइल, टी.वी. ने नेताओं-कार्यकताओं में गहरी खाई खोद दी है। हजारों-लाखों ई मेल या फालोअर की आंकड़ेबाजी प्रत्यक्ष दर्शन, सुनवाई का मुकाबला नहीं कर सकती। इसलिए तीन वर्षों में आपको और आपकी ही नहीं, अन्य पार्टियों के नेताओं को भी अपने दरवाजे-खिड़कियां अधिक खोलने पर विचार करना होगा। सारी दुनिया से बैर मोल लेने वाले बराक ओबामा या डेविड कैमरन न्यूनतम सुरक्षा व्यवस्था रखते हुए वाशिंगटन-न्यूयॉर्क और लंदन के सामान्य रेस्तरां में खाते-पीते और कार्यकर्ताओं की छोटी-छोटी सभाओं में मिल जाते हैं। हमारे महान भारत में प्रधानमंत्री निवास पर सप्ताह में दो-तीन दिन बिना पूर्व अनुमति सुबह दो घंटे के दौरान दर्शन और प्रथा की बातें तो नई पीढ़ी के लिए विक्रम-बेताल की कहानी की तरह कल्पनीय हो गई हैं। कई सांसद-विधायक (इनमें भगवा वस्त्र से साधु-महंत कहलाने वाले भी) काली वर्दी और स्टेनगन से लैस सुरक्षाकर्मी लेकर घूमते हैं। यह कैसा 'राम-राज्य' है प्रभु।

नरेंद्र भाई, आपके इरादों और वायदों पर करोड़ों लोगों ने विश्वास किया। तभी तो भाजपा सत्ता में आई। उसे पहले कांग्रेस पार्टी और उसके नेतृत्व पर भरोसा था। पार्टी से ज्यादा नरसिंह राव और मनमोहन सिंह के सत्ताकाल में शेयर घोटाले से लेकर टूजी स्पेक्ट्रम घोटाले और जनता से कटे होने के कारण उन्हें सत्ता से उखाड़ दिया गया। घोटालों और पापों की कहानियां सुनते-सुनाते लोग थक चुके हैं। उन्हें सही मायने में शांतिपूर्ण माहौल वाले भारत का सुनहरा भविष्य अपेक्षित है। आप ईरान, अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी जितनी भी यात्राएं कर लें, अपना भारत उदार, आर्थिक दृष्टि से खुशहाल और सहिष्णु बनाने का प्रयास करें, तभी 2017 से 2019 के रास्तों में कांटों के बजाय फूल बिछे होंगे।

शुभचिंतक

www.outlookhindi.com